दादा भगवान परिवार का

जून २०१८

शुल्क प्रति नकल : ₹ 20/-

अक्रम एक्सप्रेस

पाशवी आनंद

संपादकीय

बालमित्रों,

अभी तक हमने आनंद की बहुत सारी बातें की हैं। लेकिन क्या आपको पता है कि यदि आनंद गलत तरीके से, गलत जगह से लिया जाता है तो वह भी एक प्रकार का गुनाह कहा जाता है?

नहीं न?

तो आइए, इस अंक में हम देखते हैं कि गलत तरीके से लिया गया आनंद क्या है? वह किस तरह ले लिया जाता है? और हम उसे लेने से पहले स्वयं को कैसे रोके।

- डिम्पल मेहता

पाशवी आनंद

अक्रम एक्सप्रेस

Editor : Dimple Mehta

Printer & Published by

Dimple Mehta on behalf of
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj - 382421,
Ta & Dist - Gandhinagar.

Owned by
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj - 382421,
Ta & Dist - Gandhinagar.

Printed at
Amba Offset
B-99, GIDC, Sector-25,
Gandhinagar - 382025.

Published at
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj - 382421,
Ta & Dist-Gandhinagar.

वर्ष : ६ अंक: ३
अखंड क्रमांक: ६३
जून २०१८

संपर्कसूत्र
बालविज्ञान विभाग
त्रिमंदिर संकुल, सीमंधर सिटी,
अहमदाबाद - कलोल हाइवे,
मु.पो. - अडालज,
जिला : गांधीनगर - ३८२४२१, गुजरात
फोन : (०७९) ३९८३०१००
email:akramexpress@dadabhagwan.org
Website: kids.dadabhagwan.org

वार्षिक सदस्यता(हिन्दी)
भारत :२०० रुपए
यू.एस.ए. :१५ डॉलर
यू.के. :१२ पाउन्ड
पाँच वर्ष
भारत : ८०० रुपए
यू.एस.ए. : ६० डॉलर
यू.के. : ५० पाउन्ड
D.D/ M.O 'महाविदेह फाउन्डेशन' के नाम पर भेजो।

ज्ञानी कहते हैं...

प्रश्नकर्ता : पाशवी आनंद क्या है?

नीरू माँ : पाशवी आनंद अर्थात्...

- हमें जिसके साथ अच्छा नहीं लगता

- हमें जिसके साथ स्पर्धा हो

- जिसके साथ दुश्मनी हो

- जिसके साथ बैर बंध गया हो

- द्वेष हो

जब उसे सभी के सामने नीचा देखना पड़े या उसका कुछ बुरा हो जाए या उसका कुछ नुकसान हो जाए तब हमें अंदर आनंद होता है कि अच्छा हुआ, बहुत उड़ रहा था न! अब गिरा। ठिकाने पर आ गया न! कुदरत ने सीधा कर दिया न! ऐसा सब। जबकि हमारा उससे कुछ लेना देना भी नहीं है फिर भी हम अंदर ही अंदर खुश होते हैं। उसे पाशवी आनंद कहते हैं।

उस आनंद का मुख्य कारण यह है कि वह व्यक्ति हमें पसंद नहीं है।

हमें जिस पर राग है, यदि उसका कुछ नुकसान हो जाता है तो हम दुःखी हो जाते हैं। और जिसके साथ द्वेष है, बैर है, जो हमें पसंद नहीं है, यदि उसका नुकसान होता है तो अंदर खुशी होती है कि देखो हो गया न सीधा।

अंदर सूक्ष्म में पाशवी आनंद होता है। बाहर तो हम सीधे सादे दिखते हैं लेकिन अंदर खुश हो जाते हैं। वहाँ तक कि जब दो लोगों की बात होती है तब एक कहता है कि मुझे दक्षिण में जाना है और दूसरा कहता है कि मुझे उत्तर में जाना है। दोनों की नोंक-झोंक चलती है। फिर सभी कहते हैं कि, नहीं... नहीं... हम उत्तर में ही चलते हैं। जिस व्यक्ति ने कहा कि उत्तर की ओर जाना है, उस व्यक्ति को आनंद होता है कि देखो सभी ने मेरा मान लिया न! वह गलत साबित हो गया न! मेरा सही साबित हुआ न! ऐसा सोचकर बहुत खुश हो जाता है। अंदर खुशी मनाता रहता है, वह सब पाशवी आनंद।

पशु को नहीं बल्कि वृत्ति को पाशवी कहा जाता है। जिसकी वृत्ति पाशवी होती है, लोग उसे जानवर जैसा कहते हैं।

यह तो नई ही बात है!

पाशवी आनंद से हम अपने आप को ही नीचे गिराते हैं क्योंकि सामने वाले को तो कुछ पता ही नहीं है कि आप भीतर से आनंद ले रहे हैं। हम ही हमारा बिगाड़ते हैं।

वृत्ति को भी राक्षसी कहा जाता है। "राक्षस" ऐसा कोई व्यक्ति नहीं है, जिनका कहानियों में वर्णन किया गया है कि जिनके बड़े-बड़े सींग होते हैं या आठ-दस हाथ होते हैं, दो-चार सिर होते हैं। ऐसा नहीं है। लेकिन उनकी वृत्ति राक्षसी वृत्ति है। इसलिए उन्हें ऐसा कहा जाता है कि राक्षस जैसा है।

पुराने ज़माने में राजा शिकार करके आनंद लेते थे। वह आनंद पाशवी नहीं बल्कि राक्षसी कहा जाता है। किसी को मारकर आनंद लेते कि मैंने इतने मारे, इतने मारे, इतनी बसें जला दीं, ऐसा सब राक्षसी आनंद कहा जाता है। राक्षसी आनंद पाशवी आनंद से भी ज्यादा भयंकर कहा जाता है।

रोग की पहचान

उस दिन संत श्री की मनोहर वाणी सुनकर आसपास के गाँवों से आए हुए भक्तजनों के दिल में यही बात गूँज रही थी कि "धन्य है यह रामपुर गाँव, जहाँ इतने उच्च कोटि के संत निवास करते हैं।"

संत श्री की ख्याति इतनी फैल गई थी कि रामपुर गाँव में जब भी संत श्री के सत्संग का आयोजन होता, तब आसपास के गाँववासी, उसका लाभ लेने ज़रूर पहुँच जाते।

रामपुर गाँव में अधिकतर हरि भाई ही संत की सेवा और सुविधाओं का ध्यान रखते थे।

दासपुर गाँव के सरपंच ने हरि भाई से कहा, "हरि भाई, वास्तव में आप बहुत पुण्यशाली हो कि आपको संत श्री की सेवा और सान्निध्य का ऐसा अनोखा अवसर प्राप्त हुआ है।"

हरि भाई का स्वर गदगद हो गया, "सही कहते हो भाई। मैं तो अनाथ था। संत श्री के आश्रित होकर मैं सनाथ हो गया। उन्होंने ही मेरी देखभाल की है और मैंने अपना जीवन उन्हें समर्पित कर दिया है।"

सरपंच ने पूछा, "सुना है कि संत श्री कभी गाँव से बाहर सत्संग करने के लिए नहीं गए हैं।"

हरि भाई ने कहा, "हाँ, सही सुना है।"

"तो, क्या हमें संत श्री की सेवा का लाभ कभी मिलेगा ही नहीं? हमारे गाँव के भाग्य कभी खुलेंगे ही नहीं?" सरपंच की आवाज़ में निराशा थी।

हरि भाई को विश्वास था कि संत कभी भी रामपुर से बाहर जाना पसंद नहीं करेंगे। हरि भाई को अंदर ही अंदर इस बात का गर्व होने लगा था कि सेवा का ऐसा अदभुत अवसर सिर्फ उन्हें ही प्राप्त होता है।

उन्होंने सरपंच के संतोष के लिए कहा, "अरे भाई निराश मत हो। प्रभु की इच्छा होगी तो आपके गाँव में संत ज़रूर पधारेंगे। चलो, मैं आपको संत के पास ले जाता हूँ। आप खुद ही उन्हें निमंत्रण दे दीजिए।"

हरि भाई ने संत श्री से सरपंच की पहचान करवाई और उनके दिल की बात कही। सरपंच दोनों हाथ जोड़कर संत श्री के सामने खड़े थे।

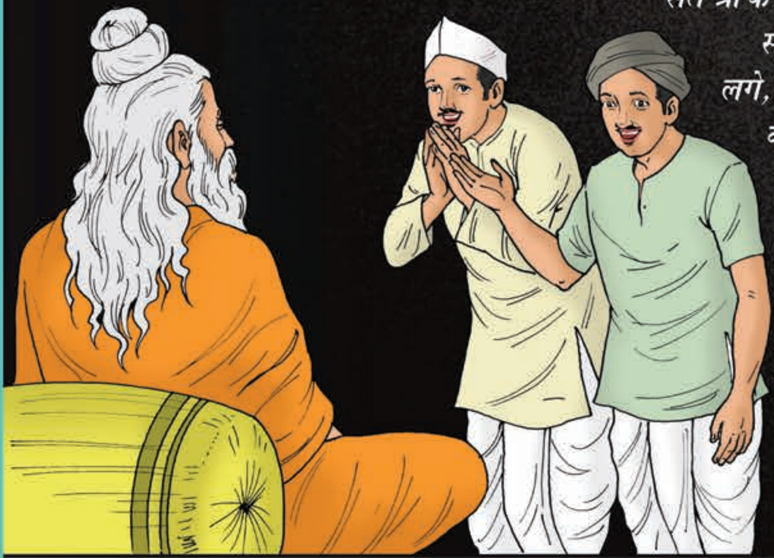

संत श्री की दृष्टि पड़ते ही सरपंच बोलने लगे, "प्रभु, दासपुर गाँव को भी आपके कदमों से पावन कीजिए।"

संत ने दोनों भक्तों के दिल के भाव पढ़ लिए।

"ज़रूर। हम दासपुर ज़रूर आएँगे," संत ने सरपंच के सिर पर हाथ रखकर कहा। सरपंच संत श्री

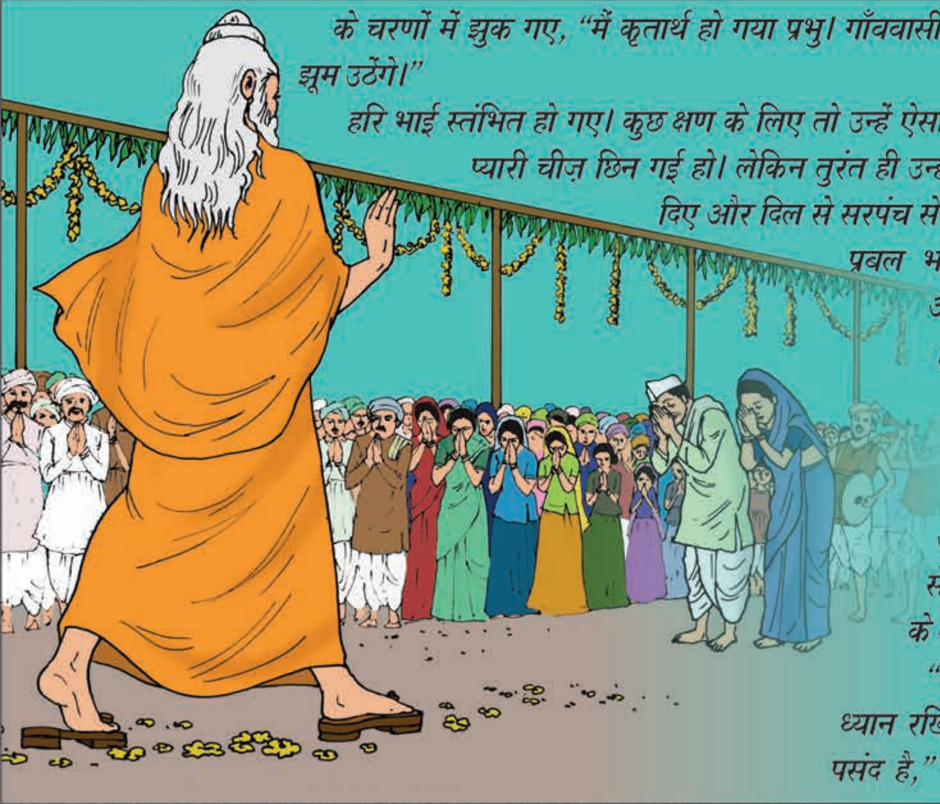

के चरणों में झुक गए, "मैं कृतार्थ हो गया प्रभु। गाँववासी यह बात सुनकर आनंद से झूम उठेंगे।"

हरि भाई स्तंभित हो गए। कुछ क्षण के लिए तो उन्हें ऐसा लगा कि जैसे अपनी कोई प्यारी चीज़ छिन गई हो। लेकिन तुरंत ही उन्होंने अपने उल्टे भाव झटक दिए और दिल से सरपंच से कहा, "सरपंच, आपके इस प्रबल भाव को धन्य है। आपको अमूल्य अवसर प्राप्त हुआ है। किसी भी तरह की मदद की ज़रूरत हो तो ज़रूर बताइए।"

अपने अनुभव के अनुसार हरि भाई ने सरपंच से संत श्री की सुख-सुविधा के बारे में कुछ सलाह दी।

"और हाँ... सरपंच जी, खास ध्यान रखिए कि संत श्री को सादगी पसंद है," हरि भाई ने इस बात पर ज्यादा ज़ोर दिया।

फटाफट दासपुर गाँव पहुँचकर सरपंच ने गाँववासियों को यह समाचार दे दिए। गाँववासी पुलकित होकर उल्लासपूर्वक संत के आगमन की तैयारी में लग गए।

सरपंच ने मूँछ पर हाथ फिराते हुए अपनी पत्नी से कहा, "हमारे गाँव का रौब पड़ना चाहिए।

"हमारी सुविधाएँ देखकर उन्हें लगेगा कि रामपुर ने उनकी इतनी कदर नहीं की, जितनी कदर दासपुर गाँव के लोगों ने की है," सरपंच ने अपने बढ़प्पन का प्रदर्शन किया।

"लेकिन मुझे ऐसा नहीं लगता कि वे बाहर के ठाट-बाट से प्रसन्न होंगे। संत श्री हमारी श्रद्धा और सच्ची भक्ति की कीमत करेंगे, न कि भौतिक चीज़ों की।" पत्नी ने सरपंच को समझाने की कोशिश की। लेकिन सरपंच ने अपने मान-तान में पत्नी की बात की कोई परवाह नहीं की।

संत श्री के आगमन से कुछ समय पहले हरि भाई और रामपुर के गाँववासी दासपुर आए।

खुद के दिए गए निर्देश से बिल्कुल ही विपरीत व्यवस्था देखकर हरि भाई को धक्का लगा।

"यह क्या सरपंच जी?" मैंने तो आप से पहले ही कहा था कि संत श्री को ऐसी चमक-दमक पसंद नहीं आएगी। ये बत्तीस तरह के पकवान। ये मलमल के आसन, यह सब संत श्री के लिए नहीं चलेंगे," हरि भाई कहे बिना नहीं रह सके।

"अरे हरि भाई, जीवन में पहली बार ऐसी सेवा का अवसर प्राप्त हुआ है। हमारे भाव पूरे होने दो न। आप रामपुरवासी सिर्फ सत्संग का लाभ लेना। हम यजमान हैं और आप हमारे मेहमान।" सरपंच को हरि भाई की बात अस्वीकार करने का बिल्कुल भी अफसोस नहीं था, बल्कि अपनी की हुई व्यवस्था पर गर्व था।

रामपुरवासियों को सरपंच का यह व्यवहार बहुत ही विचित्र लगा।

एक सेठ ने हरि भाई को आश्वासन देते हुए कहा, "हरि भाई, आपने जैसी संत की देखभाल की है वैसी तो कोई नहीं कर सकता। संत की नाराजगी देखकर यह सरपंच ठिकाने आ जाएगा।"

दूसरे ने सेठ की बात से सहमत होते हुए कहा, "सही कह रहे हो सेठ। इस सरपंच की बुद्धि बिगड़ गई है कि उसने हरि भाई के निर्देशों का अनादर किया है। जिस व्यक्ति ने पूरी ज़िंदगी संत की सेवा की है, उसकी बात तो सुननी ही चाहिए न!"

किसी भी प्रकार का प्रतिभाव दिए बिना हरि भाई वहाँ से चले गए। लोगों को लगा कि हरि भाई को किसी कि टीका-टिप्पणी में रुचि नहीं होगी। लेकिन हकीकत तो यह थी कि ये बातें सुनकर, हरि भाई को अंदर से बहुत ही मीठा लग रहा था। यह जानकर वे खुश हो रहे थे कि अपने गाँववासियों की नज़र में वह सही हैं और सरपंच गलत।

दासपुर गाँव में संत श्री का भव्य स्वागत किया गया। संत ने अपने दर्शनमात्र से लोगों का दिल जीत लिया और सत्संग हुआ।

भोजन का समय हुआ। महँगे आसन बिछाए गए। चाँदी के बर्तनों में तरह-तरह के व्यंजन परोसे गए। हरि भाई के चेहरे पर गंभीरता थी। लेकिन मन ही मन वे खुश हो रहे थे, "जब संत अपनी नाराजगी व्यक्त करेंगे तब इस सरपंच को समझ में आएगा कि मेरी सलाह नहीं मानकर उन्होंने कितनी बड़ी भूल की है।"

संत श्री आसन पर विराजमान हुए। उनके चेहरे पर स्थिरता थी।

संत बोले, "सरपंच जी, दासपुर गाँव का आनंद उल्लास देखकर हमें बहुत प्रसन्नता हुई है।"

सरपंच को नीचा देखना पड़ेगा ऐसा सोचकर खुश हो रहे हरि भाई की आशा पर पानी फिर गया। "यह क्या संत ने ज़रा भी नाराजगी व्यक्त नहीं की? मुझे ऐसा था कि..."

"हरि भाई, खीर हम अपने कमरे में ग्रहण करेंगे। खीर का कटोरा और नींबू का टुकड़ा लेकर हमारे कमरे में आइए," संत ने हरि भाई को विचारों में से जगाया। वहाँ उपस्थित सभी गाँववासियों को आशीर्वाद देकर संत अपने कमरे में गए।

हरि भाई ने खीर का कटोरा संत के सामने रखा।

संत ने कहा, "नींबू की दो बूँदें खीर में डालो।"

हरि भाई को आश्चर्य हुआ। लेकिन उन्होंने संत के कहे अनुसार किया।

संत ने कहा, "अब यह खीर लाओ।"

हरि भाई ने हाथ जोड़कर कहा, "माफ करना प्रभु। मैं यह खीर आपको नहीं दे सकता।

ऐसी खीर ग्रहण करोगे तो रोग हो जाएगा।"

संत ने अपना आशय स्पष्ट किया, "सही कह रहे हो हरि भाई। जैसे नींबू की दो बूँदें डालने से खीर रोगिष्ठ बन जाती है, वैसी ही यदि पाशवी सुख कि बूँद हमारे अंदर पड़ेगी तो हम मनुष्य-गुणों को खोकर पशु जैसे बन जाएँगे।"

"पाशवी सुख?" हरि भाई को कुछ समझ में नहीं आया।

"हाँ, हरि भाई। जो हमें पसंद नहीं हैं और जब उसका नुकसान होता है तब हमें जो आनंद होता है, उसे पाशवी आनंद कहते हैं। सरपंच ने आपकी सलाह नहीं मानी, इसलिए आपको उनके प्रति अभाव हो गया। यदि मैंने सरपंच से दो कठोर शब्द कहे होते, तो आपको सुख होता या दुःख?" संत ने हरि भाई को उनके अंदर के रोग से पहचान करवाई।

हरि भाई का सिर नीचे झुक गया। अब उन्हें संत की बात समझ में आ रही थी, "सुख होता, प्रभु।"

"अरे, सरपंच को नीचा देखना पड़ेगा ऐसी कल्पना से ही आप सुखी हो गए थे। जब गाँववासियों ने सरपंच को गलत और आपको सही बताया तब भी आपको अंदर ही अंदर मीठा लग रहा था न! " संत ने तो हरि भाई के सभी भाव पढ़ लिए थे, "यदि सामने वाले के दुःख से हम सुखी होंगे तो हम कितने नीचे गिर जाएँगे! आप हमेशा हमारी सेवा में रहते हो। आपका ऐसा नुकसान होता हो तो हम कैसे देख सकते हैं। "

"नींबू की दो बूँदें खीर में डालो।"

संत की करुणाभरी वाणी सुनकर, हरि भाई की आँखों से पश्चाताप के आँसू निकल पड़े।

"माफ करना प्रभु, अब ऐसी भूल नहीं करूँगा," कहकर हरि भाई ने संत के चरण पकड़ लिए।

चलो खेलें...

१)

नीचे दिए गए बॉक्स में कौन सा नंबर आएगा?

	6	3	2
-	3	□	5
	2	6	7

२)

बालमित्रों, नीचे दिखाए गए प्रत्येक बालक को उनकी मनपसंद चीज़ों तक पहुँचने में मदद कीजिए।

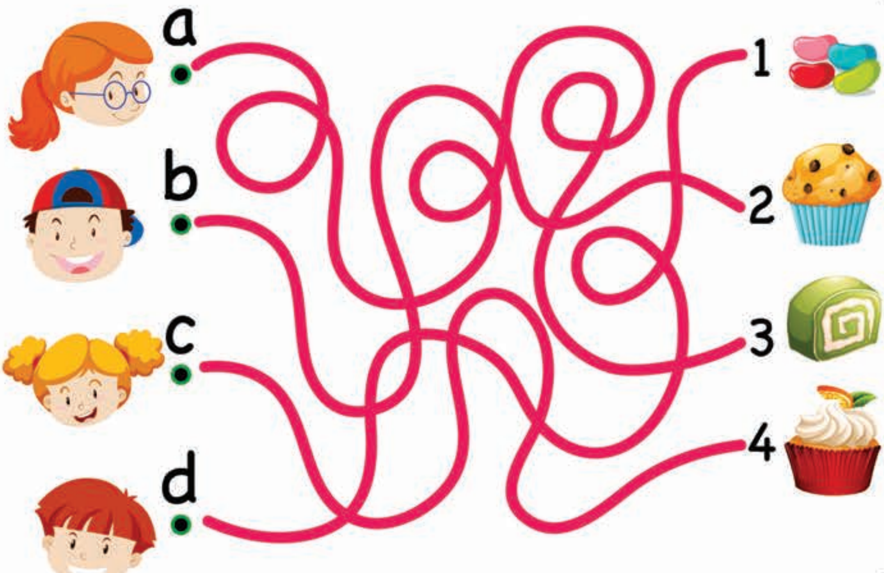

जादुई कैमरा
"स्टॉरी टेलिंग" क्लास में सभी ध्यान से कहानी सुन रहे थे।
सूरज, नीरज और धीरज कैमरे को ऐसे घुमा-फिराकर देखने लगे। वह अलग ही तरह का कैमरा था।
फिर तीनों दोस्तों ने तरह-तरह के पोज़ेज़ में फोटो खिंचवाए।
लेकिन अब उन फोटोज़ को देखा कैसे जाए? सभी को उलझन हुई।
दीदी, सूरज के बड़े भैया तो फोटोग्राफर थे न!

हाँ। टोली बड़े भैया के पास गई। कड़ी मेहनत के बाद बड़े भैया ने नए कैमरे में से फोटो का प्रिन्ट निकाला। फोटो देखकर सभी को आश्चर्य हुआ। ऐसे फोटो? यह कैसा कैमरा है?
उन फोटोज़ में ऐसा तो क्या था, दीदी?
यह सस्पेन्स हम अगले हफ्ते बताएँगे। आज का स्टॉरी टाइम यहाँ समाप्त होता है।
ओह दीदी, आप हमेशा सस्पेन्स क्रिएट करके ही स्टॉरी एन्ड करती हो।
तभी कीर्तन वंदन के पास आकर बैठ गया।
चिंता मत कर दोस्त। नेक्स्ट वीक सस्पेन्स खुलेगा उससे पहले हम भी उस टोली की तरह, नेचर पार्क में जाकर फोटो खींचेंगे।
डिज़िटल कैमरा?
यस, बेडमिन्टन में ब्रोन्ज़ मैडल जीतने की खुशी में डैडी ने मुझे डिज़िटल कैमरा दिलवाया है। शशांक भैया हमारे साथ आएँगे।
ओ.के.।
वंदन के चेहरे पर स्माइल थी लेकिन अंदर ही अंदर उसे कीर्तन के लिए जेलसी हुई।
कीर्तन के पापा उसकी सभी डिमान्ड पूरी करते हैं। जो माँगता है वह हाज़िर हो जाता है और मुझे तो...

नेचर पार्क के शांत और मनमोहक तालाब में, गुलाबी फ्लेमिंगो बहुत ही सुंदर लग रहे थे। कीर्तन फोटोग्राफी करने में मग्न हो गया।
कीर्तन मुझे कैमरा देगा ? आई वोंट टु क्लिक सम पिक्चर्स।
हाँ, श्योर। थोड़ी देर के बाद देता हूँ।
वंदन को अपमान लगा।
थोड़ी देर बाद यानी क्या? कब से फोटो ले रहा है। तुरंत देने में क्या जाता है?
तभी कीर्तन कीचड़ में फिसल गया। कैमरा उसके हाथ से छिटककर पत्थर पर गिरा और उसका लेन्स टूट गया।
शशांक भैया और वंदन ने उसे सहारा देकर खड़ा किया।
दोस्त, चोट तो नहीं लगी न?
मुझे तो नहीं लगी है लेकिन कैमरा...
अरे यार डोन्ट वरी। कैमरा तो रिपेयर हो जाएगा।
वंदन ने कीर्तन को बाहर से आश्वासन दिया, लेकिन वह अंदर ही अंदर खुश हुआ। कैमरा रिपेयर हो ऐसी उसे बिल्कुल भी इच्छा नहीं थी।

दूसरे हफ्ते, स्टॉरी-टेलिंग क्लास में दीदी ने "जादुई कैमरा" का सस्पेन्स खोला।
जानते हो मित्रों, उस फोटो में क्या था? फोटो में चेहरे तो तीनों दोस्तों के थे, लेकिन सूरज और नीरज का आकार एक भयानक पशु जैसा था।
उस रहस्य का पता लगाने हर बार की तरह टोली पहुँची।
दाढ़ी वाले बाबा के पास।
फोटो देखकर बाबा जी की आँखें एकदम स्थिर हो गई।
यह एक जादुई कैमरा है जो आपके रूप का नहीं लेकिन अंदर के भावों का फोटो खींचता है।
आज धीरज की निष्फलता पर आप लोग खुश हुए, उसे पाशवी आनंद कहते हैं। उस पाशवता की फोटो इस कैमरे ने खींची है।
सूरज और नीरज स्तब्ध हो गए। शर्म से उनकी आँखें झुक गई। उस दिन से दोनों ने तय किया कि नींद में भी पाशवी आनंद नहीं लेना है। धीरज दोनों दोस्तों को देख रहा था।

मीठी यादें

ब्रह्मचारी भाइयों में से एक भाई के परिवार से कभी भी कोई नहीं आता था। एक बार उनकी मदर और कुछ अन्य व्यक्ति नीरू माँ के सत्संग में आए। यह देखकर भाई बहुत खुश हो गए। सत्संग पूरा होने के बाद उन्होंने खुश होकर अन्य सभी भाइयों से कहा कि आज तो मेरी मम्मी और बुआ, इत्यादि सभी सत्संग में आए हैं।

यह सुनकर एक भाई तुरंत बोले, "मम्मी आई ऐसा नहीं, फाइल आई, ऐसा कहो।"

यह सुनकर उस भाई को बहुत दुःख हुआ कि ऐसा कमेन्ट देकर उनकी खुशी में सहभागी होने के बजाय उस पर पूरा पानी ही फेर दिया। इसलिए उन्होंने उस भाई से बोलना ही बंद कर दिया। काम की बात भी यदि दूसरे से पूरी होती हो तो कर लेते।

उनका ऐसा व्यवहार देखकर उस भाई को समझ में आया कि मुझसे कुछ भूल हो गई है। इसलिए उन्होंने प्रतिक्रमण शुरू कर दिए। फिर उन्होंने नीरू माँ को सब बात बता दी।

नीरू माँ ने कहा, "तुम्हें पता चला कि तुम्हारी ऐसी वाणी क्यों निकली?"

भाई ने मना किया।

नीरू माँ ने कहा, "मैं कुछ जानता हूँ" का रोग लग गया है। मैं ज्ञान में रहता हूँ, तुम ज्ञान में नहीं रहते। खुद ज्ञान में बहुत रहता है ऐसा अंदर वर्तता है तभी ऐसी वाणी निकलती है। इसे अँधेरे की भूल कहते हैं। वाणी खुला अहंकार है। वाणी क्या निकलती है, उस पर से पता चलता है कि अहंकार किस में वर्तता है।"

फिर तो नीरू माँ ने उन्हें अच्छे से फटकार लगाते हुए कहा, "श्रीमद कहते हैं कि जब तक अपना आत्मा स्पष्ट रूप से अनुभव में नहीं आता, तब तक ज्ञानीपुरुष ही मेरा आत्मा है ऐसा निःशंक ढंग से मानना। इसलिए ज्ञानी हमारा आईना कहलाते हैं। यदि अपने अंदर की भूल खुद को पता नहीं चलती है तो उसे ज्ञानी ही बता सकते हैं। इसलिए ज्ञानी के पास अपनी जितनी भूलें खुली हो जाएँगी न, ठीक है यदि इतने सब लोगों की हाज़िरी में बात करने की हिम्मत नहीं होती है तो साल में एक बार लिखकर रिपॉर्ट तो दी जा सकती है। यदि ऐसा करेंगे न, तो बहुत हेल्प होगी।"

सभी बातें सुनकर उन भाई को नीरू माँ के लिए बहुत अहो भाव उत्पन्न हुआ कि,

धन्य है! मुझे मेरी भूल से बाहर निकाल सके, ऐसे ज्ञानी मिले हैं।

१) टॉमस बोर्गे

टॉमस बोर्गे ने निकारागुआ देश में चल रही राजनीति के विरुद्ध एक क्रांति शुरू की थी। वे उस क्रांति के लीडर थे। राजनेताओं ने टॉमस को गिरफ्तार करवा दिया, उन्हें जेल में बंद करवा दिया। करीब ५०० घंटों तक उन्हें अत्यंधिक यातनाएँ दी गईं।

क्रांति के बाद टॉमस को जेल से मुक्त किया गया। वे देश के इंटीरियर मिनिस्टर बने।

एक दिन, टॉमस ने एक व्यक्ति को जेल में देखा।

उसके पास जाकर टॉमस ने हाथ बढ़ाया। वह व्यक्ति वही जेलर था, जिसने निर्दयी होकर टॉमस को अत्यंत कष्ट और पीड़ा पहुँचाई थी।

हाथ आगे बढ़ाकर टॉमस बोले, "आज बदला लेने का समय आया है।"

टॉमस का बदला यही था कि उन्हें कोई बदला नहीं चाहिए था। टॉमस ने उस व्यक्ति का हाथ पकड़कर उसे दिल से माफ कर दिया।

इस तरह, जिस इंसान ने घंटों तक निर्दयता से उन्हें पीड़ा पहुँचाई थी, उसकी दुर्दशा देखकर टॉमस को ज़रा भी अच्छा नहीं लगा। "ऐसे इंसान के साथ ऐसा ही होना चाहिए" ऐसा विचार या कल्पना करके टॉमस ने पाशवी सुख नहीं लिया। उस व्यक्ति को दिल से माफ करके, वे बैर से छूट गए।

२) वेल्कम होम, मिस्टर प्रेसिडेन्ट

अमरीका के इतिहास में, रिचर्ड निक्सन एक मात्र प्रेसिडेन्ट है, जिन्होंने अपने पद से इस्तीफा दिया था। कुछ गलत निर्णय लेने के कारण उनकी बहुत मानहानि हुई थी। समाज ने उनका बहिष्कार कर दिया था।

हुबर्ट हम्फ्री, अमरीका के पूर्व वाइस-प्रेसिडेन्ट थे। जब हम्फ्री की मृत्यु हुई तब उनकी अंतिम प्रार्थना सभा में,

जीवंत उदाहरण

देश-विदेश से लोग आए थे। इस सभा में एक के अलावा सभी स्वीकार्य थे। निक्सन की उपस्थिति किसी को मंजूर नहीं थी।

जब उस समय के प्रेसिडेन्ट जिम्मी कार्टर सभा में आए, तब उन्होंने देखा कि निक्सन रूम में एक कोने में अकेले खड़े हैं।

कार्टर, निक्सन के पास गए और हाथ बढ़ाकर प्रेम से बोले, "वेलकम होम, मिस्टर प्रेसिडेन्ट।"

कार्टर, निक्सन के प्रतिस्पर्धी थे। लेकिन, अपने प्रतिस्पर्धी की शर्मदायक स्थिति देखकर, पाशवी सुख लेना कार्टर को मंजूर नहीं था। जब सभा में उपस्थित सभी लोगों ने निक्सन का अनादर किया, तब कार्टर ने प्रेम का रास्ता अपनाया। दिल से सम्मान देकर, कार्टर ने निक्सन को सभा में आगे होकर स्वयं बुलाया।

अडालज में पूज्य श्री का ६६ वाँ जन्मदिन का उत्सव मनाया गया।

राजकोट, भरूच, गाँधीनगर, बरोड़ा, जामनगर,
भावनगर, मेहसाणा, अहमदाबाद में हुए
समर कैम्प की झलक

Summer Camp 2018

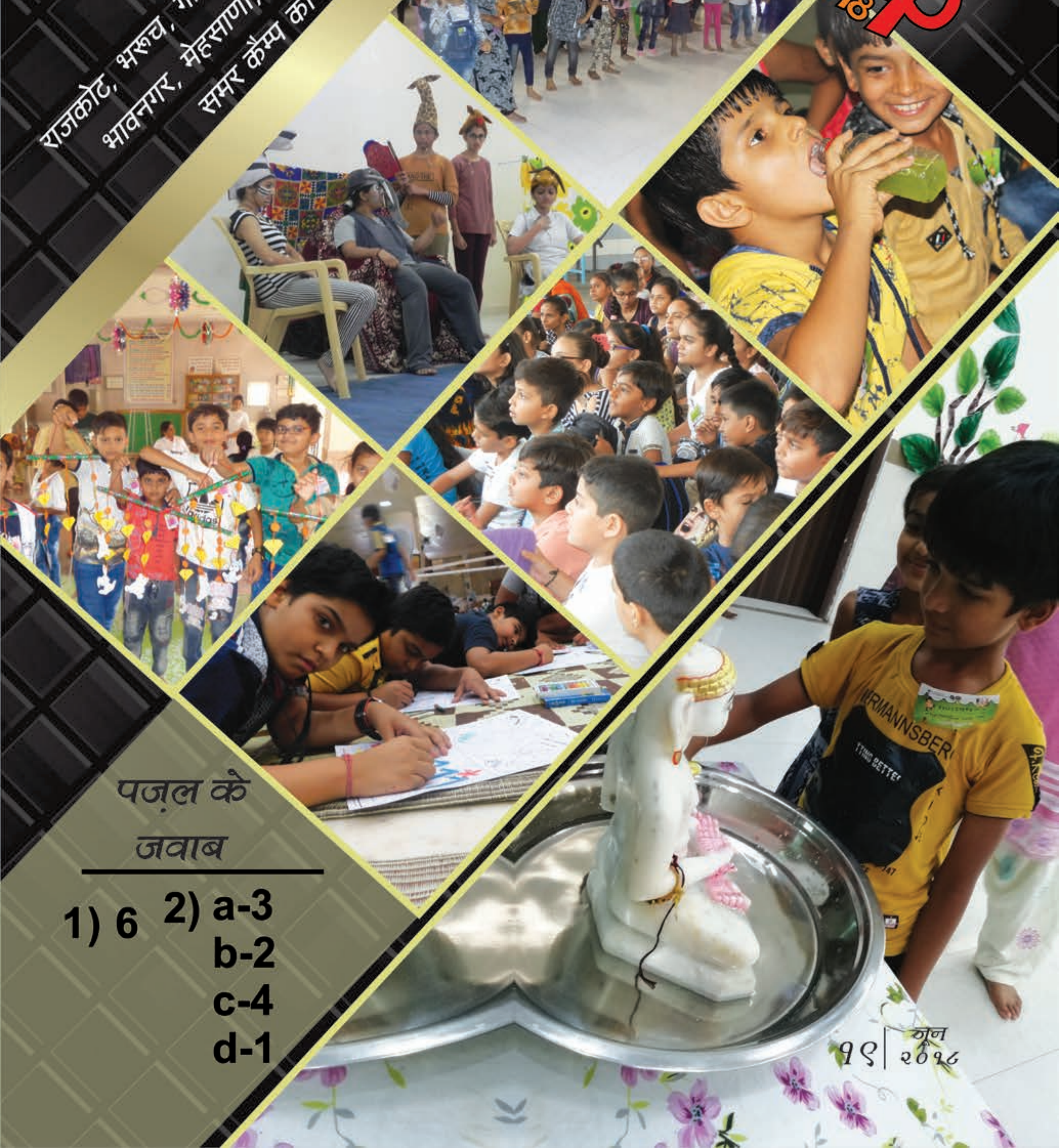

पज़ल के जवाब

1) 6

2) a-3
b-2
c-4
d-1

Akram Express

June 2018
Year : 6, Issue : 3
Conti. Issue No.: 63

BALVIGNAN
Fun 'n' Gnan with Dada

Date of Publication On 8th Of Every Month
RNI No.GUJHIN/2013/53111
Postal Reg. No. G- GNR-306/17-19
valid up To 31-12-2019
LPWP Licence No. PMG/HQ/081/2018
valid up to 31-12-2019
Posted at Adalaj Post Office
on 08th of every month

और अंत में

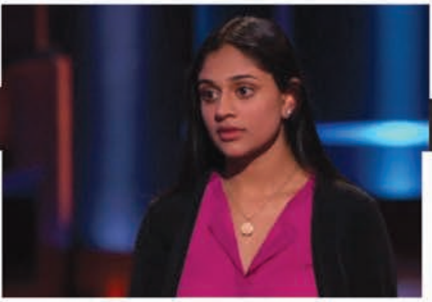

"तू कितनी बदसूरत लगती है!"

"तेरा चेहरा तो देख! ठीक से हँसना भी नहीं आता!"

"यहाँ से तेरी फोटो हटा, बेवकूफ लगती है।"

"ऑनलाइन होकर ऐसा कैसे कर सकती है? तुझे कुछ होश-वोश रहता है?"

"ऐसा सेन्सलेस काम करने के बजाय तो तुझे मर जाना चाहिए!"

"तुझे शर्म नहीं आई, ये करने से पहले, चुल्लुभर पानी में डूब मर!"

शिकागो में पढ़ने वाली १३ साल की त्रिशा प्रभु ने एक दिन न्यूज़ पेपर में पढ़ा। जिसमें उसकी ही उम्र की एक लड़की रेबेका के आत्महत्या करने की खबर थी। इस घटना को पढ़कर त्रिशा हिल गई। रेबेका की एक फ्रेन्ड बार-बार रेबेका को ऊपर लिखे हुए कमेन्टस् करती थी। कम उम्र में ऐसे कमेन्टस् से परेशान होकर रेबेका ने आखिर में आत्महत्या कर ली।

इस प्रसंग से त्रिशा को एक नई दिशा मिली। **"Stop Cyberbullying on Social Media Mission"** शुरू किया। एक टीन-एज की लड़की क्या-क्या अनुभव कर सकती है, सोच सकती है इस पर अभ्यास करके उसने मोबाइल में एक ऐप बनाई : **Re-Think**

यह ऐप ऐसे बुलिश (बदमाश) लोगों के लिए बनाई गई है "जो दूसरों को शब्दों से छेड़छाड़ करके पाशवी आनंद लेते हैं। जिन्हें बिना मतलब के तरह-तरह के कमेन्टस् करके परेशान करने में मज़ा आता है। जिन्हें दूसरों को नीचा दिखाने में मज़ा आता है।

मोबाइल में, सोशल मीडिया में कुछ भी टाइप करते समय यह ऐप कुछ समय के लिए रोक लेती है... "रुको! मुझे लग रहा है कि तुम्हारे लिखे हुए इन अपशब्दों के कारण पढ़ने वाला दुःखी हो रहा है, मेरी सलाह है कि.... तुम ऐसा मत करो और रुक जाओ।"

त्रिशा की इस ऐप से, खास करके बहुत सारे टीन-एज के लड़के - लड़कियाँ **Cyberbulling** करने से रुक गए और कुछ समय बाद उन्हें शांति का अनुभव हुआ।

इतनी छोटी सी उम्र में त्रिशा ने इतना बड़ा सामाजिक कार्य किया। जिससे गूगल ने उसे साइन्स फेर में १, ००, ००० डॉलरस् का सोशल अचिवमेन्ट ऐप का एवार्ड दिया है।

अक्रम एक्सप्रेस के सदस्यों के लिए सूचना

१. आपकी वार्षिक सदस्यता समाप्त हो रही है उसका पता कैसे चलेगा? यदि आपकी इस महीने में आई हुई अक्रम एक्सप्रेस के कवर के लेबल पर लगे हुए मेम्बरशीप नं. के बाद # हो तो यह आपकी अंतिम अक्रम एक्सप्रेस है। उदा. AGIA4313# और यदि लेबल पर मेम्बरशीप नं. के बाद ## हो तो अगले महीने में आपकी सदस्यता समाप्त होगी। उदा. AGIA4313## अक्रम एक्सप्रेस रिन्यूअल की जानकारी संपादकीय पेज पर दी गई है।

२. यदि किसी महीने का अक्रम एक्सप्रेस आपको नहीं मिला हो तो नीचे दी गई माहिती फोन नं. ८१५५००७५०० पर SMS करें।

१. कच्ची पावती नंबर या ID No., २.पूरा एड्रेस पिन कोड के साथ, ३. जिस महीने का मेगेज़ीन नहीं मिला हो, उस महीने का नाम।

Publisher, Printer & Editor - Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation
Printed at Amba offset :- B-99 GIDC, Sector - 25, Gandhinagar - 382025